॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जनवरी, 2014 वर्ष 17, अंक 1 | दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110 | वार्षिक शुल्क 100 रुपये
विक्रमी सम्वत् 2070 | दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756 | ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये | कुल पृष्ठ 8

गणतंत्र में गणनतंत्र नहीं, गुणनतंत्र आवश्यक

❒ स्व. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

गणतंत्र का पर्यायवाची शब्द प्रजातंत्र उपयुक्त ही है। राजनीति के विद्वान पंडितों ने प्रजातंत्र की परिभाषा इस प्रकार की है–'प्रजा द्वारा प्रजा के लिए तथा प्रजा पर' राज्य करने की एक प्रणाली। विगत अनेक वर्षो से स्वतंत्र देशों में प्रजातंत्र–पद्धति पर शासन–प्रशासन का कार्य सफलतापूर्वक चल रहा है। नवोदित राष्ट्रों में राजनीति की इस विधा को अपनाया जा रहा है। कुछ लोग प्रजातंत्र–विधा को अमरीका की देन मानते हैं, तो कोई इंग्लैण्ड की। निष्पक्ष रूप से प्राचीन भारत का वैदिक वाङ्मय विशेषकर अथर्ववेद, महाभारत तथा प्रक्षेपरहित–मनुस्मृति में स्थान–स्थान पर प्रजातंत्र और राजनीति के गूढ़ सिद्धान्तों की चर्चा की गई है। इसी तारतम्य में प्रजातंत्र की अंतिम ग्रामीण–इकाई ग्राम–पंचायत है। पंचायत में न तो किसी कानूनी–मध्यस्थ (वकील) और न किसी बनावटी साक्ष्य (गवाह) की ही आवश्यकता पड़ती है। वहां तो पंचायत के पांच प्रतिनिधि सर्वव्यापक परमात्मा के प्रतिनिधि माने जाते थे। जिस प्रकार इस विश्व में पांच तत्व यथा–क्षिति, जल, अग्नि, वायु तथा पृथ्वी विद्यमान हैं, उसी तरह पंचों में प्रत्येक पंच एक–एक तत्व का प्रतिनिधि है। आस्तिकता और उच्च कोटि की नैतिकता यह दोनों पक्ष–विपक्ष को अपनी बात या वाद को प्रस्तुत करने का मूलाधार थे। पंच–परमेश्वर का निर्णय मानो परमात्मा का आदेश है, उसे शिरोधार्य कर सहर्ष स्वीकार कर लिया जाता था। यही कारण था कि भारत ग्रामों में जीवित था। भारत के ग्राम उसकी मूलभूत आत्मा थे, वही प्राण थे और रक्त–संचार के माध्यम थे। पंचायत–राज ही आधुनिक राजनैतिक भाषा का एक सार्थक शब्द है। ग्राम–पंचायत और प्रजातंत्र दोनों अन्यान्योश्रित हैं। इसे कभी भी नहीं भूलना होगा।

अभी गणतंत्र (प्रजातंत्र) की चर्चा चल रही थी। प्रजातंत्र में समाज के अंतिम व्यक्ति की भी आवाज को महत्व दिया जाता है। यह तो ठीक है। गणतंत्र को गुणतंत्र बनाने का प्रयास कितने मनीषियों ने किया, यह विचारणीय है। 26 जनवरी 1950 से भारत में गणतंत्र राज्य स्थापित होने की बात सिद्धान्ततः स्वीकृत की गई। संविधान में अधिकार और कर्त्तव्य की खूब चर्चा की गई। जिस समाज में रहने वाले व्यक्ति के अधिकार और कर्त्तव्य पर गहराई से विचार किया गया है, उसे गुणवान, चरित्रवान या सभ्य नागरिक बनाने के लिए कितना कुछ अब तक किया गया, यह एक विचारणीय बिन्दु है। सम्प्रति, विधान सभाओं, विधान–परिषदों, लोक सभा तथा राज्य–परिषद के सदस्यों के क्रिया–कलाप, हावभाव, हाथापाई आदि देखकर किसका मस्तक लज्जा से नहीं झुक जाता है। हम चाहे लाख अनुशासन की बातें करें, किन्तु गणतंत्र पर्याय प्रजातंत्र की प्रतिष्ठा को सदन में कलंकित करने का कुप्रयास किन्हीं विदेशियों ने नहीं, निर्वाचित स्वदेशी व्यक्तियों ने ही, लोक सभा की गरिमा के प्रतिकूल, आचरण एक बार नहीं अपितु अनेक बार किया है। यह सब गणना–तंत्र, रूपी महामाया का विकराल स्वरूप है। हम जब तक गणनात्मक, संख्यात्मक आधार पर लोक सभा में उपस्थिति अंकित करते रहेंगे, तब तक ही ऐसे दृश्य अनेक बार देखने को विवश होना पड़ सकता है। खेद!

बहुमत का यदि संख्यात्मक अथवा गणनात्मक ही माना जायेगा तब तक संभवतः हम अपनी सम्पूर्ण आकांक्षाएं ऐसी ही विकृत अवस्था में

आओ चलें टंकारा

धूम मचाते रंग जमाते आओ चलें टंकारा।
वैदिक धर्म के जयकारों से गूंज उठे जग सारा॥
शिवरात्रि के पर्व की रौनक देख–देख मन नाचे।
ऋषि बोधोत्सव का प्यारा सुन्दर परम नजारा॥
ऋषि के उपकारों की प्यारी याद सुहानी आए।
ऋषि का जन्म स्थान पवित्र तीर्थ धाम हमारा॥
तीर्थ धाम की करें यात्रा पहन केसरी बाने।
इसी नगरी ने दुनिया के पाखण्डों को ललकारा॥
जन्म बड़ा अनमोल मिला है व्यर्थ में खो न जाए।
जीवन में एक बार अवश्य ही आना टंकारा॥

– वेद प्रकाश शर्मा, सी.एफ 2, सायनामाइड कॉलोनी, अतुल (गुजरात)

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जम्मू कश्मीर में यज्ञ का प्रथम सफल आयोजन

आत्मा की भूख मिटानी हो तो आर्य समाज आना ही होगा... पूनम सूरी

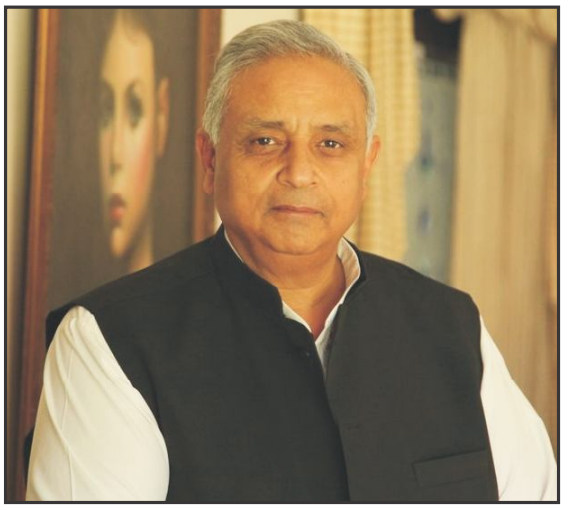

14 दिसम्बर 2013 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, जम्मू-कश्मीर के तत्त्वावधान में एक विशाल यज्ञ-महोत्सव (आओ संसार सुखी बनाएं) का आयोजन किया गया जिसमें देशभर से लगभग दस हजार की संख्या में आर्यजनो उपस्थित हुए। आयोजन के मुख्य अतिथि आर्य पुत्र श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली ने अपने उद्‌बोधन में आर्य समाज के महत्त्व को रेखांकित करते हुए आज के प्रदूषित एवं विषाक्त वातावरण में नकारात्मक प्रवृत्तियों को पराजित कर समाज और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने का आह्‌वान किया। संसार को सुखी बनाने के लिए उन्होंने ऋषि दयानन्द के द्वारा दर्शाये मार्ग पर चलते हुए संध्या, स्वाध्याय, सत्संग और सेवा को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी और कहा कि आत्मा के भोजन के लिए हमें आर्य समाज आना ही होगा। जैसा भोजन यहां प्राप्त होता है वैसा सत्य से लिप्त वेदानुसार आत्मिक भोजन केवल आर्य समाज में मिलता है। जम्मू-कश्मीर की उपसभा और युवा समाज को इस विशाल आयोजन पर बधाई देते हुए मुख्य अतिथि ने जोरदार शब्दों में कहा कि जिस प्रकार जम्मू में सारे देश से आर्यजन इकट्‌ठे हुए है, इसी प्रकार यदि ईश्वर ने चाहा तो अगले वर्ष श्रीनगर में आर्य समाज का झंडा बुलंद करेंगे जहाँ से प्रत्येक व्यक्ति को अपने मज़हब में रहते हुए श्रेष्ठ इंसान बनने का संदेश दिया जाएगा।

इस अवसर पर 201 कुण्डीय यज्ञ महोत्सव का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. प्रमोद योगार्थी, प्राचार्य, दयानन्द ब्रह्म विद्यालय, हिसार ने अपने ब्रह्मचारियों सहित वेदमन्त्रों का पाठ कर वातावरण को वैदिक बना दिया। इस अवसर के लिए नागबनी स्कूल के 400 छात्र-छात्राओं को यज्ञ प्रक्रिया में विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

मंचीय कार्यक्रम में प्रादेशिक उपसभा एवं आर्य युवा समाज, जम्मू-कश्मीर की ओर से मुख्य अतिथि के हाथों से राज्य के मूर्धन्य आर्य संन्यासियों और विद्वानों को मानपत्र व शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। जम्मू की प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों और विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने भी संन्यासियों से आशीर्वाद ग्रहण किया।

नागबनी स्कूल की ओर से अध्यापक/अध्यापिकाओं तथा छात्र कलाकारों द्वारा बहुत ही सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द के जीवन को दर्शाती ऋषिगाथा नामक नृत्य नाटिका ने सब का मन मोह लिया।

कार्यक्रम के अंत में सेवा प्रकल्प के रूप में सौ से अधिक जरूरतमंद लोगों को कम्बल दान किए गए एवं कुछ गरीब महिलाओं को सिलाई की मशीनें भी दान में दी गई। कार्यक्रम के अंत में 7500 से अधिक अतिथियों ने ऋषि लंगर के रूप मं जम्मू के पारम्परिक आतिथ्य का आनन्द उठाया।

टंकारा ऋषि बोधोत्सव

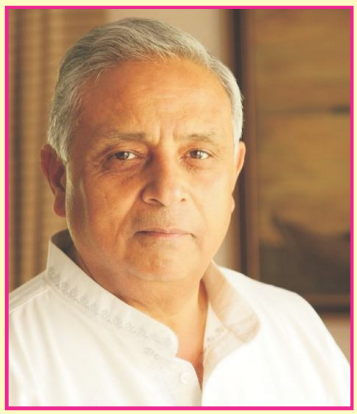

दिनांक 26, 27, 28 फरवरी 2014 तक

27 फरवरी 2014 को होने वाले

मुख्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि होंगे।

श्री पूनम सूरी जी

(प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति)

टंकारा एक स्वप्न/एक यथार्थ

टंकारा एक स्वप्न था। इस स्वप्न को पूर्ण रूप ग्रहण करने में आर्य जनता को पूरे साठ वर्ष लग गये। एक समय था जब यह स्वप्न भी नहीं था। टंकारा का नाम इतिहास की गहराइयों में कहीं अतीत में खोया हुआ था। आर्यजन नहीं जानते थे कि उस स्थान से भी आर्य समाज का कोई संबंध होगा। ऋषि दयानन्द की जय के नारे तो अवश्य लगाते थे परन्तु नहीं जानते थे कि टंकारा के साथ उस युग प्रवर्तक का भी कोई सम्बन्ध है। केवल मात्र शुरु से यही पता था कि मौरवी रियासत में किसी स्थान को उस महापुरुष की जन्मस्थली होने का सौभाग्य प्राप्त है। परन्तु यह टंकारा ही है यह आर्यो को बताया उस ऋषि भक्त श्री देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय ने जिन्होंने ऋषि जीवन की खोज में अपना पूरा जीवन लगा दिया और युक्ति संगत प्रमाण प्रस्तुत करते हुए बताया कि टंकारा ही देव दयानन्द की जन्मभूमि है। बाबू देवेन्द्र नाथ की कृपा से ही टंकारा को महर्षि की जन्म भूमि के रूप में पहचाना और तब से वह आर्य जनों के स्वप्न में स्थान पा सका। कई वर्षों की उपेक्षा और गहरी निद्रा के पश्चात् जब ऋषि भक्त जागे तब यह नहीं समझ पाये कि वह टंकारा में क्या करें। महर्षि दयानन्द का जन्म स्थान है इसके प्रति उनका कोई दायित्व भी है। यह पहचानने में वह असफल रहे। इस उपेक्षा की अवधि लगभग 35-40 वर्ष रही। तदुपरान्त उन्हें ज्ञान हुआ कि टंकारा में तो ऋषि का स्मारक बनना चाहिए। यह स्मारक क्या हो, इस उलझन में फिर कई वर्ष निकल गये। कुछ प्रयत्न हुए, कुछ मनस्वी लोगों ने इस दिशा में प्रयत्न किए। परन्तु टंकारा को स्वप्न की अवस्था से नहीं निकाल सके। धीरे-धीरे ऋषि भक्तों ने इस स्वप्न को यथार्थ का रूप देना प्रारम्भ कर दिया। और निश्चय हुआ कि टंकारा में एक अर्न्तराष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय स्थापित किया जाये। इसकी भी अब 52 वर्ष गुजर चुके हैं और इस समय इस उपदेशक विद्यालय में 200 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। समय की माँग को देखते हुए दो प्रकार की शिक्षायें यहां दी जा रही हैं। एक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त शिक्षा और दूसरी केवल मात्र उपदेशक बनने के लिए जो विद्यार्थी इस रणभूमि में आये हैं, को प्रशिक्षण देना। इसका नाम अन्तर्राष्ट्रीय रहा लेकिन केवल मात्र राष्ट्रीय स्तर पर कार्य होता रहा। लेकिन वर्तमान में इस उपदेशक विद्यालय में नेपाल और मारिशस के विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और वह भी उपदेशक बनने की शिक्षा। लेकिन इस स्वप्न को पूरा होने में 53 वर्ष लग गए, कारण, इस कार्य में समय के साथ आर्य समाज के सम्मुख कई ऐसी उलझने आई कभी धन अभाव के कारण और कभी शक्ति अभाव के कारण यह कार्य होने से रह गया, लेकिन अब इसमें तीव्रता आई है और शीघ्र ही यहां राष्ट्रीय भाषाओं और विदेशी भाषाओं के उपदेशक तैयार करने के लिए, योजनायें बनाई जा रही हैं। और इन पर शीघ्र ही कार्य आरम्भ होगा, ऐसी आशा है।

अगर 53 वर्ष का मन्थन करें कि क्या हम पूर्ण रूप से ऐसे उपदेशक निकाल सके या उन उपदेशकों को आज भी हम आर्य समाज के क्षेत्र में कार्य करते हुए देखते हैं। कई हमारे उपदेशक हैं जो समय के थपेड़े और बढ़ती हुई महंगाई के कारण आर्य समाज के उपदेशक क्षेत्र में नहीं रह सके लेकिन मैं साधुवाद देना चाहता हूं कुछ ऐसे पूर्व स्नातकों को जिन्होंने अपने समय में बहुत सी उलझनों का सामना किया और आज वह उस स्थान पर पहुंच चुके हैं जहां हम गर्व से कह सकते हैं हमारे पूर्व स्नातक वेद प्रचार और ऋषि मिशन के कार्य में निरन्तर तत्पर हैं। लेकिन हमें सोचना होगा कि आने वाले दिनों में जब हम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की बात करते हैं तो क्या हमें इस प्रकार के ब्रह्मचारी प्राप्त होंगे। हमें अपने घरो से ही इस कार्य का प्रारम्भ करना होगा आज जनता को अपने घरों से ऐसे वीर बालक निकालने होंगे जो इस क्षेत्र में कार्य करने में आगे आयें। इस समय कई ब्रह्मचारी हमारे सामने हैं, निश्चित ही हम उन्हें उस क्षेत्र में जरूर अग्रसर करेंगे।

टंकारा गीत

गाँव-गवाड़ी चौपालों तक फैलाने को उजियारा,
गूंज रहेगा टंकारा।
सबके जीवन उन्नत होंगे,
पिछड़े हैं वे विकसित होंगे।
आर्यावर्त में ऐक्य-भाव की होगी फिर निर्मल धारा।
गूंज रहेगा टंकारा।।
संस्कार के रूप खिलेंगे,
बिछुड़ गये वे लोग मिलेंगे।
दयानन्द के संदेशों का होगा फिर जय-जयकारा।
गूंज रहेगा टंकारा।।
शान रहेगी लोकराज की,
संरचना होगी समाज की।
वेद-ऋचाओं, श्रुति-ग्रंथों का युग आएगा दोबारा।
गूंज रहेगा टंकारा।।

एक और सपना जो टंकारा के पूर्व आयोजकों ने देखा था कि एक ऐसा भव्य एवं विश्वदर्शनीय स्मारक बने जैसा कि कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानन्द स्मारक बना है। आज विश्व के लोग उस स्मारक को देखने के लिए आते हैं। आवश्यक नहीं कि स्मारक उस जैसा ही हो लेकिन वहां से प्रेरणा लेना कोई गलत बात नहीं है। वर्तमान में प्रयत्न किया जा रहा है कि जन्म भूमि को विश्वदर्शनीय बनायें, जिसमें आर्य जनता के अपार सहयोग की आवश्यकता है। परमपिता परमात्मा की कृपा से, स्वामी जी का जन्म स्थान आर्यसमाज को प्राप्त हुआ, यह आर्य समाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा और वर्तमान में अनथक प्रयास के बाद उस स्थान पर एक भव्य भवन बनवा कर उसमें जन्मगृह का स्थान अलग से सुरक्षित कर बनवा लिया गया है। इस वर्ष टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त देखेंगे कि सीमित प्रयासों के रहते हुए भी इस स्थान को एक भव्य रूप देने का प्रयत्न किया गया है। टंकारा ग्राम के बिल्कुल आरम्भ में एक भव्य 'दयानन्द द्वार' का निर्माण हो चुका है। यह स्वप्न पूर्व अधिकारियों ने देखा था जिसे आज परमात्मा की कृपा से कार्यान्वित कर लिया गया है।

मेरी समस्त ऋषि भक्तों से प्रार्थना है कि इस भव्य रूप को देखने के लिए टंकारा अवश्य पधारें। कार्य बहुत हैं, स्वप्न प्रतिदिन देखते रहते हैं, कल्पनायें करते रहते हैं और आने वाले वर्षों में स्वप्नों को किस प्रकार कार्यन्वित करना है अधिकारी इसमें दिन प्रतिदिन लगे रहते हैं। आर्य जनता का सहयोग जैसे-जैसे मिलता रहेगा, वैसे-वैसे यह स्वप्न यथार्थ में परिवर्तित होता रहेगा, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

आर्य जनता से करबद्ध प्रार्थना हैं कि टंकारा के महत्व को जानें। देश में भिन्न-भिन्न आर्य समाजें जो कस्बों, नगरों, शहरों प्रदेशों में स्थापित की गई हैं, वे सभी ऋषि दयानन्द की धरोहर ही तो हैं और इस सब की प्रेरणास्थली टंकारा ही है। जितने भी डी.ए.वी. स्कूल, गुरुकुल एवं अन्य आर्य संस्थाएं कार्य कर रही हैं, टंकारा भूमि (गुरुधाम) उन सभी को दिन प्रतिदिन प्रेरणा देता है, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो....। आर्यो! टंकारा को मत भूलो टंकारा पूरे विश्व में आज आर्यों की प्रेरणास्थली है।

अजय टंकारावाला

उत्तरायण का आरम्भ दिवस–मकर संक्रान्ति

विश्व के प्रारम्भिक ज्ञानग्रन्थ वेद और उसके अन्तर्गत यजुर्वेद में सूर्य की महत्ता के सम्बन्ध में आया है–

चित्रन्देवानामुद गादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्रेः।
आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।

– यजुर्वेदः अध्याय 7, मन्त्र 42

अर्थ– जो सब देवों में श्रेष्ठ और बलवान है, जो सूर्यलोक प्राण, अपान और अग्नि का भी प्रकाशक है, जो भूलोक, अन्तरिक्ष और पृथ्वी लोक में व्यापक है, जो जड़ और चेतन जगत का आत्मा=जीवन है, वह चराचर जगत का प्रकाशक परमात्मा हमारे हृदयों में सदा प्रकाशित रहे। वैज्ञानिकों के मतानुसार वैदिक धर्म में निहित विचार सभी आधुनिक विचारों के अनुकूल हैं। ऐसा नहीं कि 'घर में चपटी और स्कूल में गोल'। सौर वर्ष वह है कि जितने काल में पृथिवी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा पूरी करती है, उसको एक 'सौर वर्ष' कहते हैं। यह कुछ लम्बी वर्त्तुलाकार (मृदंग–वाद्य के समान) जिस परिधि पर पृथ्वी भ्रमण करती है उसको 'क्रांत्तिवृत्त कहते हैं। गणित प्रधान ज्योतिषविदों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के 12 भाग कल्पित किए हुए हैं। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को उत्तरायण और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायण काल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दृष्टिगोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि (10वीं) की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क (चौथी) संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विशेष महत्वशाली माना जाता है। यही कारण है कि उत्तरायण के आरम्भ दिवस 'मकरसंक्रान्ति' को सर्वाधिक महत्व प्रदान किया गया है।

छोटे दिन/बड़े दिनः–हमारी उपरोक्त मान्यताएं वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री कैथपास के अनुसार प्रतिवर्ष 21 मार्च, 21 जून, 22 सितम्बर तथा 22 दिसम्बर को होने वाली खगोलीय घटना के वैज्ञानिक महत्व को सभी स्वीकार करते हैं। जिस प्रकार 21 मार्च को सूर्य के दक्षिण गोलार्द्ध से उत्तरी गोलार्द्ध तक में आने से मौसम का तापमान बढ़ता है और दिन की लम्बाई भी बढ़ने लगती है, उसी प्रकार 22 सितम्बर को सूर्य के दक्षिण गोलार्द्ध की ओर रूख करने के साथ ही धीरे–धीरे तापमान में गिरावट दर्ज की जाती है और दिन छोटे होते हैं। ध्यातव्य है कि 22 सितम्बर को सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध से दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रवेश करने के साथ–साथ 22 व 23 सितम्बर को रात–दिन बराबर होंगे। इसके बाद धीरे–धीरे दिन की लम्बाई कम होती जायेगी। इस खगोलीय घटना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष 22 दिसम्बर को वर्ष का सबसे छोटा दिन होता है। इसके बाद पुनः दिन की लम्बाई बढ़ती जाती है। यह ध्यान रखने योग्य सिद्धान्त है कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है किन्तु सामान्यतः ऐसा प्रतीत होता है कि सूर्य भूमध्य रेखा के उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध की ओर गमन करती है। जब 22 दिसम्बर से दिन बढ़ते लगता है, तब ईसाइयों ने अपना भ्रमजाल फैलाने की दृष्टि से दो दिन 25 दिसमबर को बड़ा दिन कहना प्रचारित कर दिया और 25 दिसम्बर जो कि 'ईसा' की मृत्यु है, उसे ही बड़ा दिन कहना प्रारम्भ कर दिया।

हम आर्यो (हिन्दुओं) के सभी पर्व पर्यावरण ऋतु चक्र से जुड़े हैं। हमने प्रकृति के निकट रहकर जीवन जीना सीखा है। हमारा प्रत्येक पर्व ऋतु चक्र के अनुसार ही मनाया जाता है। ठीक, इसी मान्यता के अनुसार मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। हाथ–पैर जाड़े से सिकुड़े जाते हैं, **'रात्रौ जानुर्दिवा भानुः'** रात्रि में जंघा और दिन में सूर्य, किसी कवि की यह उक्ति दोनों पर आजकल ही पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है। मकर संक्रान्ति से सूर्य ने उत्तरायण में प्रवेश किया। दिन बड़े और रातें छोटी होना प्रारम्भ हो गई। आलस्य का भूत भाग गया है। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद से लेकर आधुनिक ग्रन्थ तक सविशेष वर्णन की गई है। वेद तथा उपनिषदों में इस काल को 'देवयान' कहा है। हमारे प्राचीन ऋषि मुनिगण, ऋषिकाएं एवं विदुषियां अपने शरीर के त्याग (मृत्यु) की अभिलाषा उत्तरायण में रखते हैं। उत्तरायण प्रकाश अवधि का लम्बा खंड है। उनके विचारानुसार इस समय मृत्यु को वरण करने से उनकी आत्मा सूर्यलोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। महाभारत के अनुसार इस अर्द्ध के समय अखंड़ ब्रह्मचारी भीष्म की आयु 175 वर्ष की थी। अर्जुन के बाणों द्वारा बिंध जाने पर ब्रह्मचारी भीष्म ने इसी उत्तरायण के आगमन तक शरयय्या पर 26 दिन तक शयन करते हुए प्राण उत्सर्जन की प्रतीक्षा की थी। ऐसा सुन्दर प्रशान्त एवं श्रेष्ठ समय किसी पर्व मनाने से कैसे वंचित रह सकता था। हमारी (आर्य (हिन्दू) जाति के कर्णधारों ने मकर संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण संक्रमण तिथि) का यही पर्व निर्धारित कर दिया। आज से दक्षिण में तमिल का नया वर्ष प्रारम्भ होता है। इसे ही पोंगल कहते हैं। पंजाब–हरियाणा के कृषकों का यह महान पर्व 'लोई' के रूप में मनाया जाता है।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) चलो

इस अवसर पर ऋषि भक्तो को धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्वतीय स्थानों की यात्रा कराई जायेगी।

(24 फरवरी से 6 मार्च 2014 तक)

दर्शनीय स्थानः अजमेर, पुष्करराज, ब्यावर, माउन्टआबु, उदयपुर, जयपुर, चित्तौडगढ़ तथा हल्दी घाटी, टंकारा, द्वारिका, बेट द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ मन्दिर, राजकोट, अक्षरधाम मन्दिर, वृन्दावन तथा मथुरा आदि।

किराया बस प्रति सवारी : रुपये 3500/-

कार्यक्रम

प्रस्थानः- ❒ 24.2.2014 सायं 4.00 बजे आर्य वीर नेत्र चिकित्सालय गुड़गांव से ब्यावर ❒ 25.2.2014 प्रातः 6.00 बजे ब्यावर से माऊन्ट आबू, रात्रि माऊन्ट आबू। ❒ 26.2.2014 प्रातः 6 बजे माऊन्ट आबू से चलकर सायं 3.00 बजे टंकारा।

26 व 27 फरवरी टंकारा में

❒ 28.02.2014 प्रातः 5 बजे टंकारा से चलकर द्वारिका, बेट द्वारिका रात्रि पोरबन्दर। ❒ 01.3.2014 प्रातः 11.00 पोरबन्दर से सोमनाथ मन्दिर, रात्रि राजकोट। ❒ 02.03.2014 प्रातः 6.00 बजे राजकोट से गांधीनगर, अक्षरधाम देखकर रात्रि उदयपुर। ❒ 03.03.2014 दोपहर 12 बजे उदयपुर से हल्दीघाटी-रात्रि चितौड़गढ़। ❒ 04.03.2014 प्रातः 8 बजे चितौड़गढ़ से रात्रि अजमेर, पुष्कराज। ❒ 05.03.2014 प्रातः 9.00 बजे अजमेर से चलकर रात्रि जयपुर। ❒ 06.03.2014 प्रातः 7 बजे जयपुर से चलकर मथुरा एवं वृन्दावन देखकर सायं गुड़गांव।

इच्छुक महानुभाव सीटें बुक कराने तथा कार्यक्रम के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

यात्रा प्रबन्धक मा. सोमनाथ, 363-364, प्रताप नगर, गुड़गांव, मो. 09811762364, फोन : 0124-2304873, 08800115646

મહાભારત અને યુધિષ્ઠરનો વિષાદ

ગીતાનો મૂળ ઉદ્દેશ્ય મોહને કારણે અર્જુનના મનમાં થયેલ વિરક્તતાને દૂર કરવાનો છે. ઉદ્દેશ્યને સમજવાની આવશ્યકતા છે.

યુદ્ધ આરમ્ભ થવા પહેલા યુધિષ્ઠિરે ભીષ્મ પિતામહના નેતૃત્ત્વમાં ઉપસ્થિત કૌરવોની વિશાળ સેનાને જોઈ તો પોતાના વિજયી થવામાં સન્દેહ થયો. અર્જુનને કહ્યું -

-હે અર્જુન, જો ભીષ્મે વ્યૂહની રચના એવી રીતે કરી છે કે એને ભેદવી મુશ્કેલ છે. આ વ્યૂહ રચના અક્ષોભ્ય અને અભેદ્ય છે. એટલે આપણી સેનાના પ્રાણ સંકટમાં આવ્યા છે. સમજાતું નથી કે આ સંકટમાંથી ઉદ્ધાર કેવી રીતે થશે.

અર્જુને પોતાના મોટાભાઈને ભયભભીત જોઈને, એમનો ઉત્સાહ વધારતા કહ્યું -

- મહારાજ એ જરૂરી નથી કે ઉત્તમ ગુણો વાળી અને વધારે સંખ્યામાં શૂર સૈનિકોનો સદાય વિજય જ થાય. ઓછી સંખ્યામાં પણ એને જીતી સકાય છે. એ કેવી રીતે? એ હું સમજાવું છું. આ વાત નારદ, ભીષ્મ અને દ્રોણાચાર્ય પણ જાણે છે. આવા અવસર પહેલા પણ આવ્યા છે. એક વાર દેવાસુર સંગ્રામમાં પણ આવી જ સ્થિતિ ઊભી થઈ હતી. ત્યારે ઇન્દ્રાદિ દેવતા પિતામહ બ્રહ્મા પાસે ગયા અને પોતાના સંભાવિત પરાજયનો ઉલ્લેખ કર્યો. ત્યારે સમય બ્રહ્માએ દેવતાઓને સમજાવ્યું કે વિજયના ઇચ્છુક શૂરવીરો પોતાના બળ અને પરાક્રમથી એટલા સફલ નથી થતા, જેટલા સત્ય, અક્રૂરતા, ધર્મ તથા ઉત્સાહથી થાય છે. બ્રહ્માએ એવું પણ કહ્યું હતું કે, દેવતાઓ! અધર્મ, લોભ અને મોહને ત્યાગીને અને ધર્મનો સહારો લઈને, અહંકાર શૂન્ય થઈને યુદ્ધ કરો. જ્યાં ધર્મ છે, ત્યાંજ વિજય થાય છે. એટલે મહારાજ! નિશ્ચિત રૂપે એ જાણી લો કે યુદ્ધમાં આપણો જ વિજય થશે. જ્યાં કૃષ્ણ છે ત્યાં જ વિજય છે.

યુધિષ્ઠિર તો અર્જુનની વાત સાંભળીને યુદ્ધભૂમિમાં ચાલી નીકળ્યા હતા. પરન્તુ જ્યારે અર્જુન સ્વયં યુદ્ધ ભૂમિમાં પહોંચ્યો ત્યારે એના મનમાં યુધિષ્ઠિર વાળી નિરાશા તો હતી નહીં. એ સંશયને કે વિજય કોનો થાય છે, એને એ સ્હેજે મહત્ત્વ નહોતો આપતો. એની સામે મુખ્ય વાત હતી યુદ્ધની ઉપાદેયતાની. અર્જુનના મનમાં સમસ્યા એ નહોતી કે યુદ્ધમાં વિજય અથવા પરાજય કોનો થાય છે, પણ સમસ્યા એ વસી ગઈ હતી કે યુદ્ધ કરવાથી દેશ, જાતિ અને કૌરવ પરિવારનું કલ્યાણ પણ થશે કે નહીં? આ સમસ્યા તો એ ઉદ્દેશ્ય પર જ સંશય ઊભો કરતી હતી કે જેના માટે યુદ્ધ લડાવાનું હતું.

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से यह अंक 8 पृष्ठ का प्रकाशित किया जा रहा है जिसका कि हमें खेद है। – **सम्पादक**

टंकारा यात्रा 2014

आर्यों का तीर्थ स्थल टंकारा चलो टंकारा, पोरबंदर, सोमनाथ, द्वारकापुरीधाम

टंकारा यात्रा अवधि 7 दिन

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मंदिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी के प्रेरणा से धर्मप्रेमी बहनों व भाइयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा यात्रा एवं द्वारकापुरीधाम तीर्थयात्रा का सुनहरी अवसर। 25.02.2014 को नई दिल्ली स्टेशन से चलेंगे व 04.03.2014 को वापस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा लें, जिससे कि रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके। इस यात्रा में बस-रेल व आने-जाने का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थल : - 25.02.2014 नई दिल्ली से राजधानी एक्सप्रैस द्वारा अहमाबाद के लिए प्रस्थान। - 26.02.2014 अहमदाबाद से राजकोट व टंकारा के लिए प्रस्थान यहां पर ट्रेन द्वितीय श्रेणी की होगी व रात्रि विश्राम टंकारा। - 27.02.2014 शिवरात्रि बोध उत्सव शोभा यात्रा व महर्षि दयानन्द जन्म स्थान। - 28.02.2014 टंकारा से सोमनाथ का लाईट एण्ड साउंड शो, जहां श्री कृष्ण जी को तीर लगा था व रात्रि विश्राम सोमनाथ। - 01.03.2014 सोमनाथ से द्वारका के लिए प्रस्थान भारत के चार पवित्र नगरों में से एक गोमती गंगा, नागेश्वर, द्वारका धीश मन्दिर, श्रीकृष्ण महल व भेंट द्वारका, गोपी तालाब। - 02.03.2014 द्वारका से पोरबन्दर गांधीजी का जन्म स्थान, तारा मंडल, आर्य गुरुकुल, भारत माता मन्दिर व रात्रि 9.00 बजे ट्रेन द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान। - 03.03.2014 अहमदाबाद प्रातः पहुंच कर शाम को 5.00 बजे दिल्ली की ट्रेन पकड़नी है, इसलिए यहां पर होटल की व्यवस्था नहीं की है। इसलिए सभी लोग वेटिंग रूप में फ्रेश होकर व अहमदाबाद भ्रमण करके वापस ट्रेन द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान।

नोटः- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है, यहां पर सभी यात्रियों को हाल में जमीन पर दो या तीन सोना होता है इसलिए आप अपने साथ एक पतला कम्बल, चादर अपने साथ अवश्य रखें।

यात्री किराया-स्लीपर क्लास : 9300/-, 3 ए.सी. 10700/-, 2 ए.सी. 12600/-, ❐ सीनियर सिटिजन : 8900/-, 3 ए.सी. 9900/-, 2 ए.सी. 11500/-, ❐ महिला सीनियर सिटीजन 8800/-, 3 ए.सी. 9700/-, 2 ए.सी. 11200/-

यात्रा नियम : ❐ हमारी यात्रा में अकेली व वृद्ध महिलाएं भी यात्रा कर सकती हैं, क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❐ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक/ड्राफ्ट **Arya Travel** अथवा विजय सचदेवा के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकते हैं। ❐ इन यात्राओं में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेंगे। इस यात्रा में रहने व खाने की व्यवस्था **Hotel, Tourist Class, Non-Star, Neat & Clean** होगी। इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❐ सीट बुक कराने के लिए रेल के यात्री जगन्नाथ एवं द्वारकाधीश के लिए 8000/- रूपये अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें। इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिक रदद् करवाता है तो 3000/- रूपये प्रतिव्यक्ति कटवाने होंगे व यात्रा से चार दिन पहले कैंसिल कराने पर टोटल किराये का 60 प्रतिशत कट जाएगा। ❐ इन यात्राओं में जो यात्री अन्त में टिकट कैन्सिल करवाते है उनकी जानकारी के लिए होटल व बस की बुकिंग हो चुकी होती है। इसलिए अन्त में ज्यादा रुपये कटते हैं।

आर्या ट्रैवेल्स

अमित सचदेवा
मो. 9868095401

विजय सचदेवा (सुपुत्र स्व. श्री श्यामदास सचदेवा)
2613/9, चूना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55
फोन : 011-23588482, मो. 09811171166

गौ-दान : महा-दान

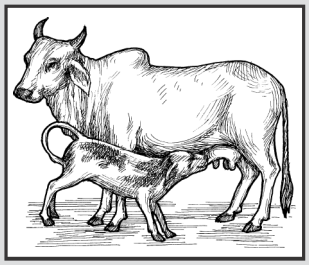

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय लिया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 15000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

(पृष्ठ 1 का शेष)

पायेंगे। गणनात्मक अथवा संख्यात्मक विधि का कोई विरोध नहीं कर सकता, किंतु गणनात्मक के साथ गुणात्मक तत्व की भी अनदेखी नहीं की जा सकती। हमारे जन प्रतिनिधि का शैक्षिक-विकास, बौद्धिक स्तर तथा सदाचार का स्तर भी बहुत आवश्यक है। यह देख या सुनकर बड़ी लज्जा आती है कि किसी विभाग-अनुभाग का सचिव अपने कथित अध्यक्ष से यहां व वहां हस्ताक्षर करने का अनुरोध करता रहे और अध्यक्ष महोदय अपने हस्ताक्षर रूपी चिड़िया को वहां बैठाते रहें? क्या सब कुछ गणतंत्रात्मक देश की लोकसभा या विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों के लिए उचित है? नहीं, कदापि नहीं। निरक्षरता या अज्ञानता स्वतंत्र राष्ट्र के लिए कलंक है। केवल "हेड एंड हैंड" (हाथ उठाकर अभिव्यक्ति) के संकेत मात्र से स्पष्ट अभिव्यक्ति शोभायमान नहीं हो सकती। अर्द्ध-शती समाप्ति के पश्चात् भी केवल हेड एवं हैंड से आगे बढ़कर 'हार्ट' का उपयोग न कर पाना किसी प्रजातांत्रिक देश के लिए शोभनीय है। क्या मालूम यह कब तक चलता रहेगा?

आज आवश्यकता है 1. हेड, 2. हैंड, 3. हार्ट अर्थात् मन-मस्तिष्क में शुद्ध हृदय से आये विचार हमारी अन्तरात्मा की पुकार के अनुरूप अभिव्यक्ति सर्वथा श्रेष्ठ मानी जाती है। प्रत्येक मनीषी और चिंतक "आत्मा की पुकार" को आधार मानकर अथवा मस्तक और हाथ उठाकर अपनी मति/सहमति व्यक्त करता है। हृदय की सहमति के अभाव में अभिव्यक्ति कुमति ही होती है। हृदय की पुकार, अन्तरात्मा की आवाज को सुनाने का अभ्यास होना चाहिए। यह शाश्वत सत्य है कि कुछ करने के पूर्व हमारी आत्मा न्याय तुला पर तौलकर अपना निर्णय दे देती है, किंतु हम अपने मानसिक विकारों के कारण उस आवाज की अनसुनी कर देते हैं। शनैः शनैः आत्मा की आवाज इतनी दब जाती है कि हम उसकी तनिक भी परवाह नहीं करते। यह स्थिति न केवल व्यक्ति अपितु परिवार, समुदाय, संगठन तथा राष्ट्र के लिए विष तुल्य घातक है। इस विष को जितनी जल्दी बाहर निकाल कर फेंक दिया जाय, उतना ही अच्छा। लेकिन यह कार्य कोई अलादीन का चिराग नहीं कर सकता। इसके लिए सतत अभ्यास की आवश्यकता है।

अन्त में हम इस गणतंत्र में गणनतंत्र के साथ ही साथ गुणनतंत्र भी अत्यावश्यक है। इसके लिए शिक्षा, दीक्षा तथा परीक्षा की बहुत आवश्यकता है। हमारे चुने गए प्रतिनिधि, सुशिक्षित, सुसंस्कारी, चिन्तक एवं मनीषी होना चाहिए। हमारा यह भी तात्पर्य नहीं कि गिरते हुए स्तर की दृष्टि से अब ये सारी उपाधियां हाथी के बाहरी दांत के तुल्य हैं। इन सबसे अधिक वरीयता सभ्यता, सुसंस्कार तथा सात्विक परिवेश को देना होगा। तभी नाव किनारे लग सकती है। हम भी चाहते हैं कि हमारे प्रतिनिधि सुसभ्य एवं सुसंस्कारित होकर प्रजातंत्र की डोर को और भी मजबूत बनायें। लोक सभा और विधान-सभा, विधान-परिषद् में निर्वाचित प्रतिनिधि स्वयं बुद्धिमान हों, अन्तरात्मा की पुकार को सुनने वाले हों, भीड़तंत्र में विश्वास करने वाले न हों। ऐसे निर्वाचित प्रतिनिधि हमारे लिए ही नहीं, विधान सभाओं, विधान परिषदों तथा लोक सभा-राज्य सभा की गुणवत्ता के प्रतीक होंगे। जब तक हमारी प्रतिनिधि सभाओं में गुणवान एवं सुसंस्कारवान् जनप्रतिनिधि समाज तथा राष्ट्र की शोभा हैं।

नमस्ते

नमः+ते दो शब्दों से मिलकर बना, वैदिक अभिवादन नमस्ते।
चिर परिचित सब खुश हो जाते,
जब करते हम नमस्ते॥

पूर्ण अर्थ युक्त, सम्मान युक्त, परमाक्षर, परमानन्द शब्द नमस्ते।
प्रसन्नचित, आनन्दमय हो जाते
जब करते हम नमस्ते॥

अनायास सर झुक जाता, जुड़ जाते हाथ सभी के।
दे देते सम्मान व्यक्ति को
जब करते हम नमस्ते॥

केन्द्रित कर स्व ऊर्जा को, कर इंद्रियों को वश में।
दिल की गहराईयों को प्रकट कर देते
जब करते हम नमस्ते॥

भारतीय संस्कृति का आदर्श है ये, दिव्य, चैतन्य शब्द नमस्ते।
गर्व करे अभिमान करे
जब बोले हम नमस्ते॥

पा लेते आशीर्वचन सब, नम्र भाव से करते जब नमस्ते।
बढ़ जाती अध्यात्म शक्ति।
जब करते हम नमस्ते॥

सुनीता शर्मा, डी.ए.वी. कैलाश हिल्स, नई दिल्ली

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 5000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

जिन्दगी में दो लोगों का बहुत ख्याल रखना
एक वो जिसने तुम्हारी जीत के लिए
सब कुछ हारा हो (पिता)
दूसरा वो जिसको तुमने
हर दुःख में पुकारा हो (माँ)

टंकारा समाचार जनवरी, 2014
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-1-2014
R.N.I. No 68339/98

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते!

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 26, 27, 28 फरवरी 2014 (बुधवार, वीरवार, शुक्रवार) को महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : दिनांक 21 फरवरी 2014 से 27 फरवरी 2014 तक
ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी
भक्ति संगीत : श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)/**श्री जगत वर्मा** (तलवाड़ा, पंजाब)
श्री अमर सिंह आर्य वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)
सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : श्री बृज मोहन लाल मुंजाल (प्रमुख हीरो ग्रुप इण्डस्ट्रीज)

मुख्य अतिथि : श्री पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 27-02-2014

अध्यक्षता: श्री सुरेश चन्द अग्रवाल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, गुजरात)

कार्यक्रम के सम्भावित आमन्त्रित विद्वान्

स्वामी सुधानन्द सरस्वती (उड़ीसा), **स्वामी आर्येशानन्द** (माउन्ट आबू), **प्रो. महावीर** (कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार), **डॉ. सोमदेव शास्त्री** (मुम्बई) **श्री कुंवरजी भाई बावलिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (अध्यक्ष, गौ सेवा सदन गुजरात), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (राज्यमन्त्री, गुजरात सरकार), **श्री कान्ति भाई अमरतिया** (विधायक मोरबी), **श्री वाघजी भाई वोडा** (अध्यक्ष कृषक भारती का.ओ. कम्पनी) **श्री विनोद शर्मा** (यू.एस.ए.), **श्री गिरीश खोसला** (यू.एस.ए.), **श्री वाचोनिधि आर्य** (गांधीधाम) **एवं इसके अतिरिक्त देश-विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।**

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिये एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 अथवा टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा कर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

श्री सत्यानन्द मुंजाल	श्रीमती शिवराजवती आर्य	रामनाथ सहगल
मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान	उपप्रधाना	मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय